निदेशक की कलम से

राष्ट्रीय विज्ञान संचार तथा सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर) की वर्ष 2007-08 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना मेरे लिए विशेष हर्ष का विषय है।

सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के समूह में निस्केयर का एक विशिष्ट तथा महत्वपूर्ण उद्देश्य है- वह है देश के वैज्ञानिकों के लिए अन्तरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विद्वतापूर्ण अनुसंधान संचार हेतु मंच प्रदान करना तथा जनमानस में विज्ञान का लोकप्रियकरण करना। पिछले कई वर्षो से निस्केयर अपनी 19 अनुसंधान पत्रिकाओं तथा तीन सुवितरित लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं के द्वारा वैज्ञानिक संचार की सर्वोत्तम परम्परा का निर्वाह करने में तत्पर है।

जहां अनुसंधान पत्रिकाओं के **इम्पैक्ट फैक्टर** में सुव्यक्त सुधार आया है वहीं गुणवत्ता, समयबद्धता तथा सुलभता जैसे पैरामीटरों के बल पर सदस्यता आधार भी उत्तरोतर बढ़ रहा है। सुलक्षित आउटरीच कार्यक्रम के द्वारा देश तथा विदेशों की सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक प्रतिभाओं को आकर्षित करने के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। निस्केयर अनुसंधान पत्रिकाओं की **ऑनलाइन सुलभता** एक दूसरी प्रमुख उपलब्धि है, जिसे निरन्तर प्रबलता पूर्वक सुदृढ़ बनाया जा रहा है और आशा की जाती है कि यह अनुसंधान पत्रिकाओं की प्रसार संख्या को और अधिक बढ़ाएगी।

निस्केयर की तीनों लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं - **साइंस रिपोर्टर** (अंग्रेजी मासिक), **विज्ञान प्रगति** (हिन्दी मासिक) तथा **साइंस की दुनिया** (उर्दू त्रैमासिक) ने विज्ञान मे अभिरुचि रखने वालों को लक्षित करते हुए सामयिक सन्दर्भ के वैज्ञानिक विषयों पर केन्द्रित करना जारी रखा है। ये पत्रिकाएं समाज के एक बहुत बड़े हिस्से को सम्पूर्ण विश्व से प्राप्त वैज्ञानिक सूचनाओं के संचार के द्वारा विज्ञान लोकप्रियकरण के सीएसआईआर के सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति कर रही हैं।

सीएसआईआर ई-जर्नल कन्सोर्टियम, सीएसआईआर की एक प्रमुख नेटवर्क परियोजना, जिसका क्रियान्वयन भी निस्केयर द्वारा किया जा रहा है, ने अक्टूबर 2007 में कन्सोर्टियम अनुसंधान पत्रिकाओं की सूची में नेचर पत्रिका को सम्मिलित करके इसकी प्रशंसा में चार चांद लगा दिये हैं। सीएसआईआर ई-जर्नल कन्सोर्टियम 4200 से भी अधिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुसंधान पत्रिकाओं तथा विभिन्न डेटाबेसों तथा मानकों यथा वेब ऑफ साइंस, डरवेन्ट इनोवेशन्स इडैक्स, डेल्फियन तथा एएसटीएम व सीएसआईआर वैज्ञानिकों को भारतीय मानकों पर सुलभता की सुविधा प्रदान कर उनके ज्ञानाधार को समृद्ध कर रहा है तथा वैज्ञानिक अनुसंधान में एक परिधि प्रदान कर रहा है। सफलता तथा उपयोगिता को देखते हुए परियोजना को 11वीं पंचवर्षीय योजना मे इसके लिए अलग से 40 करोड रुपये का आबंटन स्वीकृत किया गया है।

संस्थान ने राष्ट्रीय विज्ञान अंकीय पुस्तकालय परियोजना मे भी पर्याप्त प्रगति की है। यह एक ऐसी परियोजना है, जिसका व्यापक सामाजिक प्रभाव होगा, क्योंकि यह ई-पुस्तको के एक अंकीय पुस्तकालय के सृजन द्वारा कॉलेज तथा विश्वविद्यालय के विज्ञान के पूर्व स्नातक विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण पाठ्य सामग्री उपलब्ध करायेगी। विभिन्न 15 विषयों, जिसमें कृषि, नृविज्ञान, बायोकैमिस्ट्री,

वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, खाद्य विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, भूविज्ञान, उद्यान विज्ञान, औद्योगिक रासायनिकी, माइक्रोबायोलॉजी, फार्मेसी, बहुलक विज्ञान, सांख्यिकी तथा जन्तु विज्ञान सम्मिलित हैं, के लिए विषय सामग्री सृजन की गतिविधि जारी रही। इस विषय सामग्री के कुछ अंश विद्यार्थी समुदाय के उपयोग के लिए शीघ्र ही निशुल्क ऑनलाइन उपलब्ध कराये जायेंगे। उपलब्ध सामग्री पर प्रतिपुष्टि एकत्रित करने तथा विवरणों को पुनः संशोधित करने के लिये प्रयास किये जायेंगे।

एआईएस पाठ्यक्रम के द्वारा दृढ़ प्रतिभा विकास पर निस्केयर का फोकस एमबीए, बीटेक, एमसीए, एमएससी, एमलिब तथा अन्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के लिए इस पाठ्यक्रम के सूचना प्रौद्योगिकी की रंगभूमि में महत्वपूर्ण अनुप्रयोग तथा सुअभिकल्पित पाठ्यक्रम सामग्री तथा अनुभवी संकाय सदस्यों के कारण रुचिकर बना रहा। हमारी प्रशिक्षण सक्षमताओं की इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) द्वारा भी सराहना की गयी है। इग्नू का अध्ययन केन्द्र निस्केयर में प्रभावशाली ढंग से कार्य कर रहा है।

निस्केयर सदा नवीन चुनौतियों का सामना करने के लिए सजग है। जहां इसकी अनुसंधान पत्रिकाओं तथा लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं ने संस्थान के लिए विज्ञान संचार के क्षेत्र में विश्वस्त ब्रांड इक्विटी पृथक पहचान का सृजन किया है, वहीं हमारे वैज्ञानिकों ने विशेष महत्व की नवीन परियोजनाओं की संकल्पना करना जारी रखा।

निस्केयर अपने विशाल वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी सूचना संग्रह, जिसमें अपेटेण्टीकृत तथा पेटेण्ट साहित्य (पीसीटी न्यूनतम प्रलेखन सहित) का प्रयोग प्रायर आर्ट सर्च सुविधा का सृजन करने का विचार कर रहा है। यह सुविधा प्रायर आर्ट सर्च तथा देश के मध्य विद्यमान विस्तृत अन्तराल को भरने में सहायता करेगी। यह प्रायर आर्ट सर्च आधारित अन्वेषणों की संस्कृति का विकास करेगी तथा भारतीय अन्वेषकों के धन तथा आर एण्ड डी प्रयासों की बचत करने में सहायता करेगी।

साहित्य खोज किसी भी आर एण्ड डी गतिविधि के लिए एक अन्तर्निहित तथा महत्वपूर्ण भाग है। भारतीय अनुसंधानकर्ता प्रतिबन्धात्मकता से मूल्यवान विदेशी सारांशों तथा इन्डैक्सिंग पीरियोडिकलों तथा बिबलियोग्राफिक डेटाबेसों पर निर्भर हैं। निस्केयर ने सभी सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के सहयोगात्मक प्रयासों से एक समेकित एस एण्ड टी डेटाबेस के सृजन का प्रस्ताव रखा है। यह डेटाबेस विदेशी सारांशों तथा इंडैक्सिंग स्रोतों पर हमारी निर्भरता को कम करने में हमारी सहायता करेगा तथा इस प्रकार विदेशी मुद्रा की बचत होगी।

एक अन्य प्रस्ताव एक संस्थानिक संग्रह की स्थापना करना है, जो संस्थानिक डिजीटल सामग्री पर मुक्त सुलभता प्रदान करने के साथ-साथ इसके संरक्षण में भी सहायता करेगा। यह तकनीकी रिपोर्ट, व्याख्यान नोट, शोध प्रबन्ध जैसी सूचना सामग्री को रखेगा तथा अगले चरण में सीएसआईआर वैज्ञानिकों के विवरण फाइलों आदि को भी।

अभी तक ऐसी कोई निर्देशिका/डेटाबेस नहीं है जो देशभर की हजारों पुस्तकालयों के विषय में अद्यतन सूचना प्रदान करता हो। इस अन्तराल को भरने के लिए निस्केयर ने भारत के वैज्ञानिक, तकनीकी तथा मेडिकल पुस्तकालयों की एक निर्देशिका का संकलन करने की योजना बनाई है। प्रस्तावित निर्देशिका पुस्तकालय संग्रहण सदस्यता विवरण, उपभोक्ता, प्रोफाइल, सम्पर्क विवरण इत्यादि जैसी विभिन्न सूचनाएं प्रदान करेगी। वह विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्ताओं, व्यवसायविदों इत्यादि के लिए एक स्वागत योग्य सूचना स्रोत होगी।

एक अन्य महत्व कांक्षी प्रस्ताव अर्धवार्षिक पत्रिका साईइंडिया (SCINDIA) के प्रकाशन से सम्बन्धित है, जो अनुसंधान क्षेत्रों में आर एण्ड डी प्रवृत्तियों का विश्लेषण, संकलन तथा पूर्वानुमान करेगी। प्रेरकशील एस एण्ड टी क्षेत्रों में आर एण्ड डी सक्षमताओं तथा अन्तरालों की पहचान करके यह न केवल आर एण्ड डी कार्यकर्ताओं के लिए एक सुचालनीय उपकरण सिद्ध होगी, अपितु देश के योजनाकारों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी।

निस्केयर ने पहले ही अपनी एक पहचान बना ली है। मुझे विश्वास है कि सदा की तरह निस्केयर का वैज्ञानिक तथा तकनीकी स्टाफ इस अवसर पर उठ खड़ा होगा तथा उन सभी नवीन चुनौतियों को पूर्ण करेगा जो हमने आने वाले वर्षों के लिए निर्धारित की हैं तथा जो सीएसआईआर परिवार तथा राष्ट्र के लिए भी संस्थान की उपयोगिता तथा महत्ता को बढ़ाएंगी।

एस. के. रस्तोगी

एस.के. रस्तोगी

वार्षिक प्रतिवेदन 2007-08

निस्केयर ने अपनी नेटवर्क परियोजनाओं, सूचना सेवाओं, सूचना के प्रचार-प्रसार तथा प्रबन्धन, विज्ञान लोकप्रियकरण, अनुसंधान पत्रिकाओं के संपादन तथा प्रकाशन, मानव संसाधन विकास, ग्राफिक आर्ट तथा प्रिन्ट प्रोडक्शन तथा शैक्षिक परामर्श में अपने प्रर्दान से उपलब्धियों, पहचान तथा विकास का क्रम जारी रखा हुआ है। इस वर्ष के कुछ सफल संकेतक तथा महत्वपूर्ण घटनाएं इस प्रकार हैं-

वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी सूचना का प्रचार-प्रसार

निस्केयर वैज्ञानिक समुदाय को विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के सभी प्रमुख विषयों पर अन्तरराष्ट्रीय स्तर की 19 विद्वतापूर्ण अनुसंधान पत्रिकाओं पर संचार सहलग्नता उपलब्ध कराता है। इन अनुसंधान पत्रिकाओं में 17 अनुसंधान तथा 2 सारांशित पत्रिकाएं हैं। इसकी दो अनुसंधान पत्रिकाएं यथा इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडीशनल नॉलेज (आईजेटीके) तथा मेडिसिनल तथा एरोमेटिक प्लान्ट्स एब्सट्रैक्ट्स (मापा) को अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान प्राधिकरण द्वारा पेटेण्ट दिये जाने से पूर्व **प्रायर आर्ट सर्च** के लिए प्रयुक्त **प्रायर आर्ट जर्नल्स** की लोकप्रिय सूची में सम्मिलित किया गया है।

निस्केयर की सभी अनुसंधान पत्रिकाएं विद्वतापूर्ण संचार के लिए अर्थात् संपादकीय मंडल, पीयर रिव्यूइंग तथा समयबद्धता के लिए अन्तरराष्ट्रीय मानकों का अनुसरण करती हैं तथा अपने क्षेत्र विशेष में प्रमुख सारांशित, इंडेक्सीकरण तथा सामयिक जागरूकता सेवा द्वारा समाहित की जाती हैं। इसकी आठ अनुसंधान पत्रिकाएं एससीआई द्वारा समाहित की गई हैं। इनमें से कुछ अनुसंधान पत्रिकाएं अपने सम्बन्धित क्षेत्र में उच्च इम्पैक्ट की भारतीय अनुसंधान पत्रिकाओं के मध्य गिनी जाती हैं। इन सभी अनुसंधान पत्रिकाओं का सदस्यता आधार भी अच्छा है (दिसम्बर 2007 में 18170)।

समय-समय पर विभिन्न अनुसंधान पत्रिकाओं द्वारा महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषांक भी प्रकाशित किये जाते हैं। वर्ष 2007-08 के दौरान विभिन्न अनुसंधान पत्रिकाओं द्वारा प्रकाशित किये गये विशेषांकों के शीर्षक इस प्रकार हैं- फ्रैक्टल्स इन मेरीन सांइसेज (आईजेएमएस), मेरीन माइक्रोपेलियोन्टोलॉजिकल स्टडीज फ्रॉम दी नार्दन इंडियन ओशन (आईजेएमएस); मैनेजमैंट विद एम्फेसिस ऑन मोबाइल एण्ड टेलीकम्युनीकेशन्स इंडस्ट्री (जेएसआईआर) तथा

एडवांसेज इन इन्डस्ट्रियल बायोटैक्नोलॉजी - इंडियन सिनेरियो (जेएसआईआर); मॉलीक्युलर एण्ड क्लीनिकल इम्यूनोलॉजी इन हैल्थ एण्ड डिजीज (आईजेबीबी); माइक्रो इलेक्ट्रो मैकेनिकल सिस्ट्म्स (आईजेपीएपी), एप्लीकेशन्स ऑफ मॉसबियर स्पेक्ट्रोस्कोपी (आईजेपीएपी); रूरल वायरलैस कम्युनीकेशन (आईजेआरएसपी); जीपीएस एण्ड इट्स एप्लीकेशन्स (आईजेआरएसपी), सिलेक्ट पेपर्स फ्रॉम सीओडीईसी-06, कोलकाता (आईजेआरएसपी), एपी मित्रा कोमेमोरेटिव इश्यू ऑन आयनोस्फीयर, एटमोस्फीयर एण्ड ग्लोबल चेन्ज (आईजेआरएसपी); ट्रेडीशनल हैण्डलूम्स एण्ड हैण्डीक्राफ्ट्स (आईजेटीके); तथा इंडियन साइंस, इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी (बीवीएएपी)।

विज्ञान लोकप्रियकरण

निस्केयर अपनी सुवितरित तीन लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं साइंस रिपोर्टर (अंग्रेजी मासिक), विज्ञान प्रगति (हिन्दी मासिक) तथा साइंस की दुनिया (उर्दू त्रैमासिक) के माध्यम से विज्ञान को जनमानस मुख्यतः विद्यार्थियों के मध्य ले जाने का कार्य करता है।

ये पत्रिकाएं अपने पाठकों को विभिन्न क्षेत्रों के सामयिक विषयों की कवरेज देने के अपने उद्देय में रत हैं।

साइंस रिपोर्टर

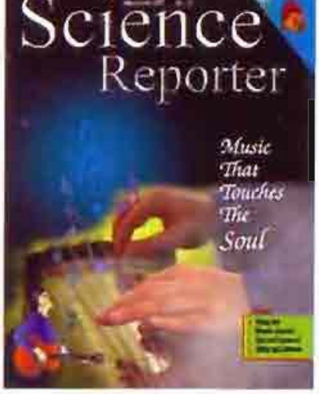

वर्ष 1964 में आरम्भ, साइंस रिपोर्टर वर्ष 2008 में अपने प्रकाशन के 45वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। यह भारत में प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में विज्ञान की सर्वाधिक पुरानी मासिक पत्रिका है जिसके पूरे देश में सर्वाधिक पाठक हैं। वर्ष 2007-08 में भी साइंस रिपोर्टर सूचना प्रौद्योगिकी, वन्य जीव, पर्यावरण, अन्तरिक्ष, नाभिकीय प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य तथा जैवप्रौद्योगिकी के अतिरिक्त सरस पाठ्य सामग्री यथा मनोरंजन, आश्चर्यजनक वैज्ञानिक तथ्य, वैज्ञानिकों का जीवन परिचय, साइंस प्रोजेक्ट, आविष्कारों एवं अन्वेषण आदि जैसे विभिन्न सामयिक विषयों पर अपने पाठकों को पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराते हुए अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में लिप्त रही है।

वर्ष के दौरान साइंस रिपोर्टर ने जिन विषयों पर पांच विशेषांक प्रकाशित किये वे हैं - नैनोप्रौद्योगिकी, पर्यावरण, भारतीय विज्ञान के साठ वर्ष, वन्य जीवन तथा अन्तरिक्ष। इसके अतिरिक्त जनवरी 2008 से चार नये स्तम्भ भी इसमें शुरू किये गये हैं; सीएसआईआर इन दी सर्विस ऑफ नेशन, व्ट्स न्यू, स्ट्रेन्ज प्लान्ट्स तथा इन दी पिक्चर।

साइंस रिपोर्टर और अधिक पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने तथा अपने कलेवर में वृद्धि करने के लिए प्रभावाशाली स्तम्भों पर विशेष ध्यान देती है। यह युवा पाठकों में वैज्ञानिक विषयों पर अभिरुचि जागृत करने का एक बढ़िया तरीका है।

विज्ञान प्रगति

दूर-दूर तक पहुंच रखने वाली हिन्दी की यह मासिक लोकप्रिय पत्रिका वर्ष 1952 में आरम्भ की गयी। वर्ष 2008 में अपने प्रकाशन के 57 वर्ष पूर्ण करने वाली यह पत्रिका अपने पाठकों को आसानी से समझ आने वाले ढंग से महत्वपूर्ण ताजा घटनाओं/विषयों को प्रस्तुत करने में जुटी है। विभिन्न विषयों पर प्रकाशित लेखों की पाठकों द्वारा प्रशंसा की जाती है जो उनके द्वारा प्रेषित पत्रों से व्यक्त होती है।

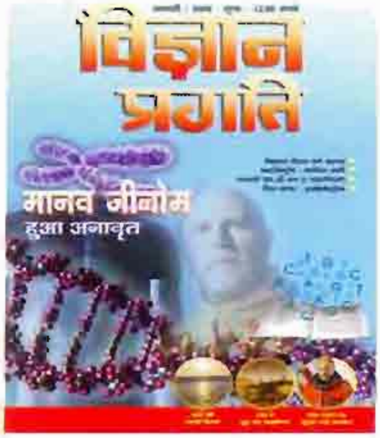

विज्ञान प्रगति के चार विशेषांक प्रकाशित किये गये - विश्व स्वास्थ्य दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, बाल दिवस तथा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस। कुछ नवीन स्तम्भ शुरू किये गये हैं, जैसे युगप्रर्वतक महाविभूति, नवीन जानकारी, रोचक जानकारी तथा एक रिपोर्ट।

सांइस की दुनिया

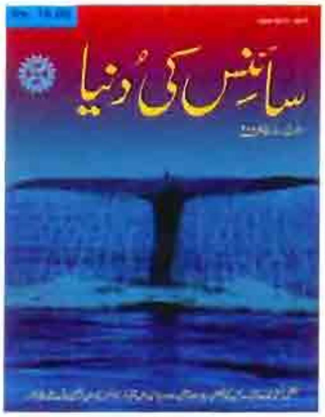

वर्ष 1975 में आरम्भ सांइस की दुनिया वर्ष 2008 में अपने प्रकाशन के 34वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। उर्दू की त्रैमासिक लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका प्रमुख लेखों के अतिरिक्त साइंस क्विज, साइंस मॉडल्स, साइंस न्यूज, साइंस फॉर चिल्ड्रन और साइंस फॉर वूमैन जैसे रोचक स्तम्भों का पैकेज भी उपलब्ध कराती है। पिछले कई वर्षों से इसमें प्रसिद्ध वैज्ञानिकों जैसे प्रो. अब्दुस सलेम (नोबेल पुरस्कार विजेता), प्रो डी.एस. कोठारी, प्रो. ए.आर. किदवई, डॉ. किशन लाल, प्रो. एम. शफी तथा प्रो. ए. रहमान के लेखों को प्रकाशित किया गया है।

सीएसआईआर न्यूज

वर्ष 1951 में आरम्भ तथा अब अपने प्रकाशन के 58वे वर्ष में प्रविष्ट कर चुकी सीएसआईआर न्यूज, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का पाक्षिक समाचार पत्रिका है, जो सीएसआईआर के विभिन्न संस्थानों के मध्य एक लाभदायक कड़ी का कार्य करती है तथा परिषद की गतिविधियों/विशेषताओं का, अन्य आर एण्ड डी संगठनों, विश्वविद्यालयों, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एजेंसियों/विभागों, उद्योगों तथा अन्य उपयोगकर्ताओं, जनसंचार माध्यम आदि में संचार करती है। सीएसआईआर न्यूज, सीएसआईआर सम्बन्धी सूचनाओं का प्रचार विदेशों में भारतीय मिशनों तथा भारत में विदेशी मिशनों द्वारा करती है। यह अनुसंधान एवं विकास कार्यों, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण विपणन, व्यावसायीकरण/उपयोगिता, प्रायोजकता, सहयोगात्मक कार्य, आईपीआर इत्यादि से सम्बन्धित समाचारों का प्रकाशन करती है। इसके अतिरिक्त अनुसंधान

पत्रिकाओं में सीएसआईआर वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित उच्च इम्पैक्ट शोधपत्रों के सारांश, महत्वपूर्ण सम्मेलनों, सेमिनारों/कार्यशालाओं/प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विभिन्न हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन, स्थापना दिवस समारोह, व्याख्यान, निदेशकों की नियुक्ति, आने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में उद्घोषणा इत्यादि को भी समाहित करती है। इसमें एस.एस. भटनागर पुरस्कार विजेताओं के उत्कृष्ट योगदानों को भी प्रकाशित किया जाता है। 30 अक्टूबर 2007 का अंक 65वें सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया था।

सीएसआईआर समाचार

वर्ष 1984 में आरम्भ, सीएसआईआर समाचार अब अपने प्रकाशन के 25वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। यह हिन्दी में प्रकाशित होने वाला मासिक समाचार बुलेटिन है, जिसमें सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं में होने वाले क्रियाकलापों/कार्यक्रमों विशेषकर अनुसंधान तथा विकास सम्बन्धी गतिविधियों को प्रकाशित किया जाता है तथा इसके परिणामस्वरूप यह उनके मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है। यह सूचनाओं को अन्य वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी विभागों, विश्वविद्यालयों तक भी प्रसारित करता है। जून 2007 का अंक सारस पीटी-2 की प्रथम उड़ान, अगस्त 2007 अंक आस्ट्रेलियाई एयर शो में एनएएल के हंसा पर आवरण कथा तथा नवम्बर 2007 अंक सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह पर केन्द्रित था। इसके अतिरिक्त विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं/संस्थानों के हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह तथा दिवस समारोहों को अक्टूबर तथा दिसम्बर 2007 के अंकों में समाहित किया गया।

सीएसआईआर न्यूज तथा सीएसआईआर समाचार का पूर्ण पाठ निस्केयर की वेबसाइट www.niscair.res.in पर उपलब्ध है और इसे सीएसआईआर वेबसाइट www.csir.res.in से भी जोड़ा गया है।

सूचना स्त्रोत

सीएसआईआर ई-जर्नल्स कन्सोर्टियम - सीएसआईआर की एक नेटवर्क परियोजना

सीएसआईआर ई-जर्नल्स कन्सोर्टियम सीएसआईआर की एक नेटवर्क परियोजना है तथा निस्केयर इसका क्रियान्वयन संस्थान है। इस परियोजना का उद्देश्य सीएसआईआर के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान पत्रिकाओं पर इलेक्ट्रॉनिक सुलभता उपलब्ध कराने तथा इस प्रकार सीएसआईआर सूचना संसाधनों को पूलिंग, शेयरिंग तथा इलेक्ट्रॉनिक रूप में सुलभता प्राप्त करने की सुविधाओं को सशक्त बनाने तथा डिजीटल पुस्तकालयों के उद्‌भव को उत्प्रेरित करने के दृष्टिकोण से इलेक्ट्रॉनिक सुलभता की संस्कृति को केन्द्रित करना है।

इस परियोजना के अन्तर्गत 16 अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशकों के साथ सहमति बनायी गयी है जिसमें सम्मिलित है - एल्सवियर सांइस, स्प्रिंगर एण्ड क्लुवेर, अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स, ब्लैकवैल, अमेरिकन सोसायटी ऑफ सिविल इंजीनियरिंग, जोन विले, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, अमेरिकन सोसायटी ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग, रॉयल सोसायटी ऑफ कैमिस्ट्री, टेलर एण्ड फ्रैंसिस, एमेरेल्ड, आईईईई, एसीएम तथा नेचर पब्लिशिंग ग्रुप को ई-जर्नल्स पर सुलभता प्राप्त करने के लिए समाहित किया गया है। सीएसआईआर प्रयोगशालाएं इस परियोजना के कार्यान्वयन से पूर्व 20-200 प्रिन्ट जर्नलों की तुलना में अब 4200 अनुसंधान पत्रिकाओं पर सुलभता प्राप्त करने में सक्षम हैं। इस परियोजना में बिबलियोमेट्रिक डेटाबेस, पेटेण्ट डेटाबेस तथा मानक यथा वेब ऑफ साइंस, डरवेन्ट इनोवेन्स इन्डेक्स, डेल्फियन, एएसटीएम स्टैण्डर्ड तथा भारतीय मानकों को सीएसआईआर वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी कार्मिकों को विस्तीर्ण सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से समाहित किया गया है। इस परियोजना को 40 करोड़ रुपये के आबंटन के साथ 11वीं पंचवर्षीय योजना तक के लिए बढ़ा दिया गया है।

सीएसआईआर ई-जर्नल्स कन्सोर्टियम सुविधा का प्रयोग करने के लिए एनएसएल परिसर में प्रवेश प्रयोगकर्ता सुविधा प्रदान की गयी है। वर्ष के दौरान लगभग 124 अनुसंधानकर्ताओं ने इस सुविधा का लाभ उठाया तथा विद्वानों को 19,004 लेख उपलब्ध कराये गये।

राष्ट्रीय विज्ञान अंकीय पुस्तकालय (एनएसडीएल)

एनएसडीएल परियोजना का उद्देश्य संस्थानिक स्तर पर कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों के विज्ञान के पूर्व स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को ई-पुस्तकों को अंकीय पुस्तकालय के द्वारा गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध कराकर शहरी-ग्रामीण के अन्तराल को सेतु बनाकर समाप्त करना है। वर्ष के दौरान सामग्री सृजन गतिविधि 15 विषयों में जारी रही। जो इस प्रकार हैं - कृषि, नृविज्ञान, बायोकैमिस्ट्री, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, माइक्रोबायोलॉजी, फार्मेसी, बहुलक विज्ञान, सांख्यिकी तथा जन्तु विज्ञान। अंकीय पुस्तकालय के सृजन के लिए डी स्पेस तथा जीएसडीएल का प्रयोग कर एक सॉफ्टवेयर समाधान का विकास प्रमुख गतिविधि है। अन्तिम रूप दिये गये पाठ डी स्पेस तथा जीएसडीएल अंकीय पुस्तकालय समाधानों के प्रयोग द्वारा इन्टरनेट पर डाले जाएंगे। ई-ऑब्जैक्ट, अनुपूरक पाठ्य सामग्री, प्रस्तुतीकरण इत्यादि के प्रयोग के द्वारा उन्हें और भी समृद्ध बनाया जा रहा है।

वैल्थ ऑफ इंडिया

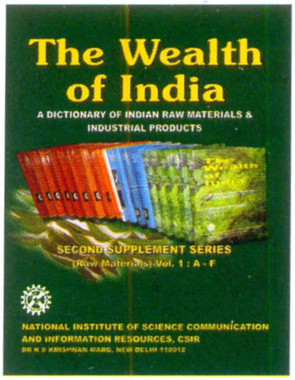

वैल्थ ऑफ इंडिया - रॉ मैटिरियल्स सप्लीमैंट सीरीज के अन्तर्गत द्वितीय अनुपूरक श्रृंखला जिसमें G से Ph अक्षर सम्मिलित हैं, के दूसरे संस्करण का प्रकाशन किया गया। इस संस्करण में 365 पादप जाति तथा 695 प्रजातियां सम्मिलित हैं। पांच अतिरिक्त जातियां यथा जैक्यूमोन्टिया, केलास्ट्रॉमिया, मेलिक्सिस तथा फोटिनिया तथा 50 अतिरिक्त प्रजातियों को इस संस्करण में स्थान दिया गया है।

भारत की सम्पदा - प्राकृतिक पदार्थ

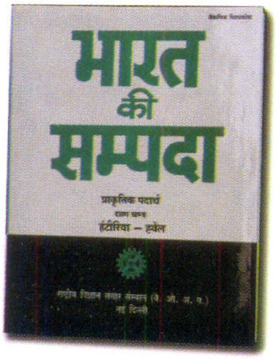

वर्ष 1969 में आरम्भ भारत की सम्पदा - प्राकृतिक पदार्थ, वैल्थ ऑफ इंडिया - रॉ मैटिरियल का हिन्दी रुपान्तर है जिसमें पादप, जन्तु तथा खनिज के रूप में भारत में प्राप्त प्राकृतिक पदार्थों की विस्तृत सूचना समाहित की गयी है। ग्यारहवें खण्ड की पाण्डुलिपि को तैयार कर अन्तिम रूप देने का कार्य प्रगति पर है। 11वें खण्ड के लिए अधिसूचित, सम्पादित 97 लेखों में से 90 लेखों को अन्तिम रूप दिया जा चुका है तथा 85 लेखों को फार्मेटिंग के लिए तैयार किया गया है।

रॉ मैटिरियल्स हर्बेरियम एण्ड म्युजियम

आर्थिक महत्व के पौधों, जन्तुओं तथा खनिजों के रॉ मैटिरियल हर्बेरियम म्यूजियम की स्थापना वर्ष 1978 में वैज्ञानिकों, अनुसंधानकर्ताओं, व्यापारियों, अपरिष्कृत औषध विक्रेताओं, उद्यमियों, उद्योग, विद्यार्थियों तथा जनसामान्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए की गयी थी। इस अवधि के दौरान 200 पादप नमूनों का संग्रहण, पहचान की गयी तथा हर्बेरियम में रखे गये, 190 नमूनों की लेबलिंग की गयी, 140 नमूनों का रासायनिक रूप से संरक्षण किया गया, 215 नमूनों

की माऊंटिंग तथा स्टिच किया गया, 190 नमूनों का इंडेक्सीकरण, 170 नमूनों को प्राप्ति क्रमांक दिया गया तथा 177 नमूनों को हर्बेरियम में सम्मिलित किया गया। इसके अलावा, 152 ग्राहकों के 401 अपरिष्कृत औषध नमूनों को जांचा गया जिसमें फार्मास्यूटिकल कम्पनियां, अपरिष्कृत औषध विक्रेता, व्यापारी, विद्यार्थी, अध्यापक तथा अनुसंधानकर्ता सम्मिलित हैं। इस अवधि के दौरान 700 से भी अधिक दर्शक - जिनमें स्कूलों तथा कॉलेजों के विद्यार्थी तथा अध्यापक, अनुसंधानकर्ता, वैज्ञानिक, उद्यमी, विक्रेता, अपरिष्कृत औषध विक्रेता तथा अन्य सम्मिलित हैं, ने हर्बेरियम का दौरा किया।

राष्ट्रीय विज्ञान पुस्तकालय (एन एस एल)

राष्ट्रीय विज्ञान पुस्तकालय (एन एस एल) में निम्नलिखित ई-स्त्रोतों को शामिल किया गया-एनुअल रिव्युज, क्रेडो रेफरेन्सेस, जे-गेट, एशेन्शियल साइंस इंडिकेटर्स, जर्नल साइटेशन रिपोर्ट्स(जेसीआर), वेब ऑफ साइंस -एक्सपेंडेड, वर्ल्ड वाइड इंटेलेक्चुअल प्रापर्टी सर्च(विप्स), क्वेस्टेल और इंडियन जर्नल्स डॉट कॉम। इन स्त्रोतों से संबंधित व्याख्यान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। एक अन्य प्रमुख गतिविधि थी एन आइ सी द्वारा ई-ग्रंथालय की स्थापना और ग्रंथालय से ई-ग्रंथालय में आंकडों की अपलोडिंग। वर्ष के दौरान 658 पुस्तकों का अर्जन किया गया तथा उन्हें सूची पत्रित किया गया। सीरियलों के सन्दर्भ में, 1361 भारतीय तथा 500 विदेशी पीरियोडिकलों को संग्रह में सम्मिलित किया गया तथा 400 पीरियोडिकलों को आई एस एस एन नम्बर आबंटित किये गये।

सूचना उत्पाद तथा सेवाएं

कई वर्षों से निस्केयर ने देश में अनुसंधानकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों की एस एण्ड टी सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक सूचना उत्पाद एवं सेवाएं विकसित की हैं। इन नवीन उत्पादों एवं सेवाओं का लक्ष्य व्यक्ति विशेष, संस्थानों तथा सामूहिक निकायों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से एस एण्ड टी सूचनाओं से सम्बन्धित पैकेज प्रदान करना है।

इण्डियन पेटेंट डेटाबेस (इन्पेट)

इन्पेट वह बिबलियोग्राफिक डेटाबेस है, जो भारत में वर्ष 1975-2002 तक स्वीकृत 52,624 पेटेण्टों के विषय में सूचना प्रदान करता है। इस डेटाबेस में पेटेण्ट पर आधारित कई सूचनाएं यथा पेटेण्ट शीर्षक, आवेदकों के नाम तथा

खोजकर्त्ताओं के नाम, पेटेण्ट संख्या, आवेदन संख्या, आवेदन की तिथि तथा प्रकाशन तिथि, अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण कोड तथा देश का नाम समाहित होता है। डेटाबेस को विभिन्न पैरामीटरों और उपरोक्त पैरामीटरों के किसी भी संयोजन के द्वारा खोजा जा सकता है।

बिबलियोमेट्रिक सेवा

बिबलियोमेट्रिक सेवा विभाग व्यक्ति विशेष, वैज्ञानिकों, संस्थानों तथा विभिन्न पुरस्कारों के नामांकितों के अनुसंधान प्रपत्रों का बिबलियोमेट्रिक विश्लेषण करने में संलग्न है। वर्ष के दौरान विभाग द्वारा 268 वैज्ञानिकों के 8171 अनुसंधान प्रपत्रों के उद्धरण आदेशों का विश्लेषण किया गया। इसके अतिरिक्त, अनुसंधान पत्रिकाओं के इम्पैक्ट फैक्टर (IF) प्राप्त करने के लिए अनुसंधान उद्धरण रिपोर्ट (जेसीआर) खोज भी आरम्भ की है। वर्ष के दौरान 128 भटनागर पुरस्कार विजेताओं और युवा वैज्ञानिक पुरस्कार के लिए नामित 27 वैज्ञानिकों के अनुसंधान प्रपत्रों के इम्पैक्ट विश्लेषण की परियोजना पूरी की गयी और उसकी रिपोर्ट सीएसआईआर में जमा की गयी। इसके अतिरिक्त, भटनागर पुरस्कार विजेताओं के काम के इम्पैक्ट विश्लेषण के लिए 264 पुरस्कार विजेताओं के एच-इंडैक्स का विश्लेषण किया गया। वर्ष 2007 के लिए विभाग ने सीएसआईआर अनुसंधान निर्गम (एक बिबलियोमेट्रिक विश्लेषण) भी जारी किया है।

सूचना पुनर्प्राप्ति सेवा

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सूचना स्त्रोतों की प्रचुर उपलब्धता और डॉयलाग (DIALOG) तथा एस टी एन इंटरनेशनल इत्यादि पर उपलब्ध बहुत से अन्तर्राष्ट्रीय डेटाबेसों की ऑनलाइन सुलभता के कारण निस्केयर द्वारा पेटेण्ट, मानक, तकनीकी रिपोर्ट, सम्मेलन कार्यवृत्त व्यापार तथा उत्पादों की मार्किट सूचना आदि में खोज कर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के किसी भी विषय पर उपभोक्ता द्वारा निवेदित शीर्षक पर समेकित बिबलियोग्राफी उपलब्ध करायी जाती है।

वर्ष के दौरान आरम्भिक खोजें की गयीं तथा डेटाबेस में सन्दर्भ के रूप में उपभोक्ताओं को सूचना की उपलब्धता प्रदान की गयी। शैक्षिक, वैज्ञानिक, व्यापार तथा उद्योग समुदाय के 200 से अधिक पंजीकृत आदेश निष्पादित किये गये।

कन्टेन्ट्स, एब्स्ट्रैक्ट्स तथा फोटोकापी सेवा (कैप्स)

कैप्स का मुख्य उद्देय भारतीय वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी समुदाय को विदेशी पीरियोडिकलों की उपलब्धता में हो रही तीव्र कमी द्वारा सृजित अन्तराल को भरना है। यह सेवा उन वैज्ञानिकों के लिए बहुत उपयोगी है जिन्हें विदेशी पीरियोडिकलों की उपलब्धता नहीं है। वार्षिक सदस्यता आधार पर अनुसंधान पत्रिकाओं के विवरणों (व्यक्ति विशेष के लिए 15 तथा संस्थागत सदस्यों के लिए 30) (12 मासिक प्रेषण) को पेपर, डिस्केट अथवा ई मेल के द्वारा विभिन्न विषयों से सम्बन्धित लगभग 7300 भारतीय तथा विदेशी पीरियोडिकलों में से अपनी पसन्द के विवरण प्राप्त कर सकता है। विवरण पर ब्राउज कर व्यक्ति एब्स्ट्रैक्ट्स तथा/अथवा पूर्ण लेख की फोटोकॉपी के लिए आदेश दे सकता है। वर्ष के दौरान 55 नये सदस्यता आदेश पंजीकृत हुए। 1100 अनुसंधान पत्रिकाओं के 14780 विवरण पृष्ठों की प्रिन्ट फार्म तथा ई मेल के द्वारा आपूर्ति की गयी।

प्रलेखों की खरीद तथा आपूर्ति सेवा

पूर्व इन्सडॉक की वर्ष 1952 में स्थापना से लेकर अब तक यह देश के अनुसंधानकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों की अनुसंधान लेखों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रलेख फोटोकापी आपूर्ति सेवा देता आ रहा है। निस्केयर अपनी स्वयं की लगभग 5000 अनुसंधान पत्रिकाओं के पुस्तकालय संग्रह से यह सेवा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त संस्थान कम्प्यूटरीकृत डेटाबेस नेशनल यूनियन केटोलॉग आफ साइंटिफिक सीरियल्स इन इंडिया (नुक्सी) द्वारा किसी भी दिये गये प्रलेख की उपलब्धता के विषय में जानकारी देने के लिए देश के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पुस्तकालयों के स्त्रोतों को उपयोग में लाता है। वर्ष के दौरान 2272 आदेश पंजीकृत हुए तथा 1617 आदेशों को निष्पादित किया गया।

अनुवाद सेवा

निस्केयर ने जापानी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से जापानी में

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी साहित्य प्रदान करना जारी रखा। अन्य भाषाओं - जर्मन, फ्रांसीसी, रूसी और चीनी - में भी अनुवाद सेवा पुनः प्रदान करनी आरंभ की गयी तथा कोरियाई और अरबी भाषाओं में नई गतिविधि के रूप में यह सेवा आरंभ की गयी। 70 से अधिक आदेशों को निष्पादित किया गया जिसमें 600 पृष्ठों का अनुवाद किया गया।

दुभाषिक कार्य (जापानी)

निस्केयर महत्वपूर्ण राष्ट्रीय रणनीतिक आवश्यकताओं सहित राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, कैबिनेट मंत्री और देश के अन्य नियम निधार्रकों को दुभाषी सेवाएं प्रदान कर रहा है। यह सेवा सम्मेलनों, औद्योगिक बैठकों आदि के लिए भी प्रदान की जाती है। वर्ष के दौरान, जापानी भाषा के कुल 32 दुभाषी कार्य पूरे किए गए।

मानव संसाधन विकास

निस्केयर में वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए विज्ञान संचार, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में प्रशिक्षण देने और मानव संसाधन विकसित करने के लिए विशेषज्ञ मानव शक्ति और आवश्यक सुविधाएं मौजूद हैं । निस्केयर के शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा संचालित मानव संसाधन विकास कार्यक्रम को सामान्यतः निम्न रूप से श्रेणीबद्ध किया जा सकता है:

एसोसियेटशिप इन इनफॉर्मेशन सांइस (AIS)

यह संस्थान वर्ष 1964 से लगातार प्रलेखन तथा रिप्रोग्राफी में उन्नत स्नातकोत्तर स्तर का शैक्षिक पाठ्यक्रम आयोजित करता आ रहा है। वर्ष 1977 में इस पाठ्यक्रम का नाम बदल कर एसोसियेटशिप इन इन्फॉर्मेशन साइंस (ए आई एस) कर दिया गया। अपने देश व अन्य विकासशील देशों की बदलती सूचना आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रलेखन एवं सूचना विज्ञान के बढ़ते आयामों को समायोजित करने के लिए इस पाठ्यक्रम को परिशोधित किया गया है।

वर्ष 2007-09 के बैच के लिए 22 विद्यार्थियों (20 भारतीय तथा बांग्ला देश और नेपाल से एक-एक) ने 5 सितम्बर 2007 से आरम्भ हुए ए आई एस पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। बांग्ला देश और नेपाल के छात्र को सार्क प्रलेखन केन्द्र (एस डी सी) द्वारा प्रायोजित किया गया है।

अल्पावधि/संलग्नी प्रशिक्षण कार्यक्रम

निस्केयर नियमित रूप से विभिन्न विषयों विशेष रूप से सूचना विज्ञान प्रौद्योगिकी कंप्यूटर अनुप्रयोग तथा संचार के क्षेत्र में अल्पावधि संलग्नी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करता है। इस वर्ष 13 पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 4 पाठ्यक्रम सूचना प्रबन्धन के लिए सूचना प्रौद्येगिकी, पुस्तकालय स्वचलन तथा संसाधन भागीदारी एवं पेटेंट ड्राफ्टिंग विषय पर प्रत्येक के लिए 2 पाठ्यक्रम, विनिसिस, हर्बेरियम तकनीक, तकनीकी संचार, ई-संसाधन प्रबंधन एवं लाइब्रेरी और सूचना विज्ञान पर वर्तमान रूझान पर प्रत्येक के लिए एक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया।

इग्नू प्रायोजित पाठ्यक्रम

निस्केयर को इग्नू द्वारा प्रायोजित निम्नलिखित कार्यक्रमों के लिए प्रोग्राम अध्ययन केन्द्र के रूप में अभिनिर्धारित किया गया है-

(i) कम्प्यूटर अनुप्रयोगों में स्नातकोत्तर (एम सी ए)
(ii) पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम एल आई एस)
(iii) पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान में स्नातक (बी एल आई एस)

निस्केयर को उपरोक्त निर्दिष्ट कार्यक्रमों के लिए निम्नलिखित भाग के संचालन तथा आयोजन का उत्तरदायित्व दिया गया है -

1. सिद्धान्त परामर्श
2. प्रयोगात्मक प्रशिक्षण
3. सेमिनार/परियोजनाएं
4. प्रयोगात्मक परीक्षा
5. समनुदेशनों का मूल्यांकन

वर्ष के दौरान एम सी ए के 559 विद्यार्थियों तथा एम एल आई एस/बी एल आई एस के क्रमशः 120 तथा 139 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया।

विज्ञान में युवा नेतृत्व के लिए सीएसआईआर का कार्यक्रम

संस्थान ने 28-29 जनवरी 2008 को विज्ञान में युवा नेतृत्व के लिए सीएसआईआर का कार्यक्रम आयोजित किया।

राजभाषा यूनिट

राजभाषा इकाई, राजभाषा विभाग (ग्रह मंत्रालय), भारत सरकार द्वारा निर्देशित तथा राजभाषा अधिनियम 1963 में निर्दिष्ट नियमों के कार्यान्यवन एवं अनुपालन यथा द्विभाषी फार्मों का प्रयोग और द्विभाषी आदेश/कार्यालय-ज्ञापन/अधिसूचना जारी करने एवं राजभाषा संबंधी अन्य नियमों पर कार्य करती है।

प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढावा देने के लिए राजभाषा इकाई ने चार कार्यशालाओं (प्रत्येक तिमाही में एक) का आयोजन किया। पहली तिमाही (अप्रैल-जून 2007) में हिंदी में किए गए प्रशासानिक कार्यों की जांच के लिए टेबल वर्कशॉप का आयोजन किया गया। दूसरी तिमाही (जुलाई-सितम्बर 2007) में हिंदी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया।

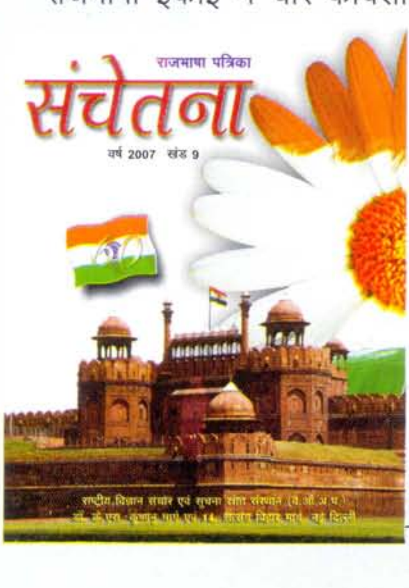

तीसरी तिमाही (अक्तूबर-दिसम्बर 2007) मे *अक्षर नवीन पर काम कैसे करें* नामक कार्यशाला का आयोजन किया गया। और चौथी तिमाही में (जनवरी-मार्च 2008) में प्रशासानिक कार्यों में राजभाषा के प्रयोग को बेहतर बनाने के लिए एक टेबल वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

राजभाषा इकाई ने हिन्दी दिवस (14 सितम्बर 2007) के अवसर पर हिंदी सप्ताह समारोह (14-21 सितम्बर 2007) का आयोजन किया जिसके अतंर्गत हिन्दी कविता पाठ, हिन्दी समाचार वाचन तथा हिन्दी वाद विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पखवाड़े के समापन समारोह में सुप्रसिद्ध हास्य कवि श्री महेन्द्र शर्मा, मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। कविता पाठ के अतिरिक्त उन्होंने राजभाषा इकाई द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने वार्षिक राजभाषा पत्रिका *संचेतना* का विमोचन भी किया।

ग्राफिक आर्ट तथा प्रिन्ट प्रोडक्शन

निस्केयर में मौजूद ग्राफिक आर्ट तथा प्रिन्ट प्रोडक्शन सुविधा संस्थान के विविध प्रकाशनों की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ साथ देश के अन्य एस एंड टी संगठनों/संस्थानों को परामर्श भी प्रदान करती है। वर्ष के दौरान फार्माकोपिया कमीशन के लिए फार्माकोपिया 2007 का अभिकल्पन, प्रोडक्शन तथा प्रिन्टिंग इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। साठ लाख रूपए की लागत वाले इस प्रकाशन को भारतीय फार्मास्यूटिकल कंपनियों के अतिरिक्त विश्व भर में वितरित किए जाने का प्रस्ताव है।

सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाएं तथा कार्यक्रम

निस्केयर विज्ञान संचार, प्रसार, और एस एंड टी सूचना प्रबंधन पद्धतियों और सेवाओं के क्षेत्र में नये उद्यम आरम्भ कर और आधुनिक आई टी अवसंरचना के अधिक प्रभावी ढंग से प्रयोग द्वारा वैज्ञानिक समाज की सेवा कर रहा है। विस्तृत रूप में निस्केयर की प्रमुख गतिविधि, पारम्परिक व आधुनिक

माध्यमों के संयोजन द्वारा वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक सूचना का भण्डारण, प्रकाशन तथा प्रसार करना है जिससे भारत तथा विदेशों में आर एण्ड डी समुदाय तथा समाज के अन्य वर्गों को लाभ होगा। वर्ष के दौरान निम्नलिखित क्षेत्रों में गतिविधियों को सुदृढ़ बनाने पर जोर दिया गयाः i). आईटी अवसंरचना विकास, ii). आईटी मानव संसाधन विकास, iii). निस्केयर वेबसाइट, और iv). सुविधा प्रबंधन सॉफ्टवेयर। निस्केयर की आईटी अवसंरचना को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए आधुनिकतम विन्यास वाले 37 कोर 2 डुओ/डुअल कोर डेस्कटॉप टी एफ टी मॉनीटर सहित, 4 हाई-एंड सर्वर, हाई-एंड प्रिंटर और यूपीएस उपलब्ध कराए गए हैं।

सी एस आई आर की आई सी टी परियोजना के अंतर्गत निस्केयर के दोनों परिसरों में वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग की सुविधा स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है।

व्यापार प्रोत्साहन

निस्केयर, देश का एक प्रमुख एस एंड टी प्रकाशन संस्थान होने के कारण, संस्थान के विविध सूचना उत्पादों की बिक्री तथा सदस्यता आधार बढ़ाने के लिए निस्केयर का एक सक्रिय बिक्री एवं विपणन विभाग है। विभिन्न प्रकाशनों से संबंधित संपादक आउटरीच कार्यक्रम के द्वारा विभाग के प्रयासों में सहायता करते हैं।

विपणन उपलब्धियाँ

बिक्री एवं विपणन प्रयासों और आउटरीच कार्यक्रमों ने अनुसंधान एवं लोकप्रिय पत्रिकाओं की प्रसार संख्या बढ़ाने में सहायता की है।

1. दिसम्बर 2007 में अनुसंधान पत्रिकाओं की प्रसार संख्या 18170 थी।
2. दिसम्बर 2007 में साइंस रिपोर्टर की प्रसार संख्या 42,000 साइंस की दुनिया की 6000 तथा विज्ञान प्रगति की 33,500 थी।
3. लगभग पैंतीस लाख रूपए की पुस्तकें बिकी।

निस्केयर की एक प्रमुख उपलब्धि जन अनुदेश निदेशालय, छत्तीस गढ़ सरकार, रायपुर से निम्नलिखित लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकों में से प्रत्येक की 600 प्रतियों का आर्डर प्राप्त करना थाः जीवनः कोशिका से कोशिका तक, सागर से संपदा, हुकुम का गुलाम, सितारों का संसार, प्लास्टिक ही प्लास्टिक, कृत्रिम बुद्धि, एक से भले दो, मन का मालिक, अंतरिक्ष में मानव, जीव और जीवन,ऑपरेशन जीन, हार्मोन की हलचल, अतिउत्तम नई पीढ़ी, उई बांह में सुई, कैंसर पर काबू, माइक्रोसॉफ्ट वर्ड प्रवेशिका, माइक्रोसॉफ्ट पावर प्वाइंट, और सूरज के आंगन में।

वर्ष के दौरान विज्ञापनों से 19.11 लाख रूपए का राजस्व और निस्केयर के विभिन्न वैज्ञानिक प्रकाशनों की बिक्री से 379.487 लाख रूपए का राजस्व प्राप्त हुआ।

सार्क प्रलेखन केन्द्र

सार्क प्रलेखन केन्द्र (एस डी सी) की स्थापना वर्ष 1994 दक्षिण एयिाई क्षेत्र के सदस्य देशों के मध्य विद्यमान सूचना अन्तराल को दूर करने के लिए एक क्षेत्रीय संस्थान के रूप में की गयी थी। पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान में मानव संसाधन विकास के अतिरिक्त एस डी सी के मुख्य कार्यों में सार्क सदस्य देशों तथा अन्य देशों के मध्य विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी तथा विकासात्मक सूचना के प्रचार प्रसार तथा अर्जन करना, सार्क सदस्य देशों में उनके पारम्परिक ज्ञान को सुरक्षित तथा संरक्षित रखने के लिए पारम्परिक ज्ञान का प्रलेखन, आधुनिक ज्ञान तथा पारम्परिक ज्ञान पर डिजीटल पुस्तकालय स्थापित करने के लिए समुचित प्रौद्योगिकियों का उपयोग तथा विकास, सार्क सदस्य देशों के बौद्धिक सम्पदा अधिकार से सम्बन्धित मुद्दों पर जागरूकता तथा समझौते का सृजन करना।

अतः एस डी सी विभिन्न विषयों पर क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय डेटाबेस सहित सूचना संसाधन के एक संग्राहक के रूप में कार्य कर रहा है। सूचना प्रबन्धन के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम केन्द्र में नियमित रूप से आयोजित किये जाते हैं।

वर्ष 2007-08 के दौरान केन्द्र द्वारा प्रतिपादित गतिविधियां निम्नलिखित हैं-

मानव संसाधन विकास

सदस्य देशों के लाइब्रेरी और सूचना प्रोफेशनल्स को प्राक्षिण देना केंद्र की एक प्रमुख गतिविधि है। सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सूचना प्रबंधन के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग पर जोर दिया जाता है। अपने आरंभ से ही, एस डी सी ने विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए हैं और सार्क सदस्य देशों के 270 से भी अधिक प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया है। वर्ष 2007-08 के दौरान संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम इस प्रकार हैं-

अल्पावधि पाठ्यक्रम

सूचना प्रबन्धन पर सूचना प्रौद्योगिकी विषय पर दो अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। 23 मई 2007 से 27 जून 2007 के दौरान आयोजित प्रथम कार्यक्रम में 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें से बांग्ला देश, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका से दो-दो और भूटान और भारत से एक-एक प्रतिभागी था। 12 सितम्बर 2007 से 17 अक्तूबर 2007 के मध्य आयोजित द्वितीय कार्यक्रम में 8 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें से बांग्ला देश, भूटान, नेपाल, और श्रीलंका से दो-दो और भूटान एवं पाकिस्तान से एक -एक प्रतिभागी ने भाग लिया।

संलग्नी प्रशिक्षण कार्यक्रम

सूचना प्रबन्धन के लिए सूचना प्रौद्योगिकी पर संलग्नी प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन माह की अवधि के लिए आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों को विशेष रूप से प्रशिक्षणार्थियों की पृष्ठभूमि तथा विशेष आवश्यकताओं के अनुरुप अभिकल्पित किया गया है। वर्ष के दौरान, दो संलग्नी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। पहला कार्यक्रम 23 मई 2007 को आरम्भ हुआ तथा 23 अगस्त 2007 तक चला। इसमें चार प्रतिभागियों- बांग्लादेश, भूटान, भारत, पाकिस्तान तथा श्रीलंका (प्रत्येक देश में से एक-एक) ने भाग लिया। द्वितीय कार्यक्रम 12 सितम्बर 2007 से आरम्भ हुआ तथा 12 दिसम्बर 2007 तक चला। भूटान, नेपाल तथा श्री लंका (प्रत्येक से एक-एक) से तीन प्रोफेशनल्स ने इसमें भाग लिया।

एसोसियेटशिप इन इनफॉर्मेशन सांइस

वर्ष 1999 से एस डी सी, निस्केयर द्वारा आयोजित एसोसियेटशिप इन इन्फोर्मेशन सांइस (ए आई एस), पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर स्तर के एक कार्यक्रम के लिए सार्क सदस्य देशों के प्रतिनिधियों को प्रायोजित कर रहा है। वर्ष 2006-08 के बैच के लिए, चार प्रतिभागियों मालदीव, नेपाल, श्रीलंका और भारत (प्रत्येक से एक-एक), ने अगस्त 2007 में प्रथम वर्ष का औपचारिक प्रशिक्षण पूर्ण कर लिया, तत्पश्चात वे अपने - अपने देशों में अपने शोध प्रबन्धों पर कार्य कर रहे हैं। वर्ष 2007-09 बैच में बांग्ला देश और नेपाल के एक-एक प्रतिभागी औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

संग्रह विकास

एसडीसी क्षेत्र में एवं क्षेत्रों पर निकाले गए वैज्ञानिक, तकनीकी एवं विकासात्मक मुद्दों पर पुस्तकों, प्रलेखों और रिपोर्टों के संग्रह का काम करती है। वर्ष के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों जैसे वर्ल्ड बैंक, यूएन संगठनों आदि की रिपोर्टों को एकत्रित और क्रमबद्ध रूप से पहचान करने पर जोर दिया गया।

पांचवीं एस डी सी - एन एफ पी समन्वयक बैठक

सार्क डॉक्यूमेंटेशन सेंटर, नई दिल्ली में 29-30 नवंबर 2007 को पांचवीं एस डी सी-एन एफ पी (नेशनल फोकल पाइन्ट) समन्वयकों की एक बैठक आयोजित की गयी। बैठक में भूटान, भारत तथा पाकिस्तान के एस डी सी - एन एफ पी समन्वयकों ने भाग लिया। समन्वयकों द्वारा की गयी संस्तुतियों में हर्बेरिया तकनीकों पर कार्यशाला, सार्क चार्टर दिवस मनाने के लिए दो दिवसीय कार्यशाला, इंटीग्रेशन ऑफ आईसीटी इन एलआईएस एंड इमरजिंग आईपीआर इश्यूज पर एस डी सी की वार्षिक कार्यशाला और एस डी सी में विदेशी भाषा अनुवाद सेवाएं उपलब्ध कराना शामिल था।

एस डी सी शासी निकाय बैठक

एस डी सी शासी निकाय की 13 वीं बैठक 12-13 दिसम्बर 2007 को आयोजित की गयी। शासी निकाय ने पूर्व महासभा बैठक के निर्णयों पर एस डी सी द्वारा किये गये कार्यो की समीक्षा की। वर्ष 2007 के दौरान केन्द्र के प्रदर्शन पर एक रिपोर्ट तथा एन एफ पी समन्वयकों की बैठक पर एक रिपोर्ट महासभा में प्रस्तुत की गयी। केन्द्र के प्रशासनिक तथा वित्तीय मुद्दों पर विचार विमर्श के अतिरिक्त वर्ष 2008 के लिए भी कार्यक्रम निर्धारित किये गये।

सार्क चार्टर दिवस आयोजन

सार्क प्रलेखन केन्द्र (एस डी सी) में 4-8 दिसम्बर 2007 को सार्क चार्टर दिवस का आयोजन किया गया। भारत, मालदीव, नेपाल, श्रीलंका और पाकिस्तान के दो दो प्रतिभागियों के लिए विनिसिस पर एक उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

काठमांडू, नेपाल में सार्क कार्यशाला

पर्यावरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, काठमांडू के सहयोग से सार्क प्रलेखन केन्द्र द्वारा काठमांडू में 16 से 20 दिसम्बर 2007 के दौरान *डिजीटल लाइब्रेरी और डाटा रिपॉजिटरीज* विषय पर सार्क कार्यशाला का आयोजन किया गया।

महामहिम, सार्क महासचिव का दौरा

महामहिम श्री चेंकयाब दोरजी, महासचिव, सार्क के दौरे ने केंद्र को गौरवान्वित किया। उनके साथ सार्क सचिवालय के निदेशक श्री मोहम्मद नजीर भी थे। निदेशक और स्टाफ के साथ महासचिव ने विस्तार से केंद्र की गतिविधियों पर चर्चा की। वे संस्थान में चल रहे अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम के विद्यार्थियों से भी मिले।